# शैक्षिक नींव की दृढ़ता की ओर एक कदम : निपुण भारत मिशन

**डॉ0 अर्पिता सिंह**

असि0 प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, प्रो. एच. एन. मिश्रा कालेज ऑफ एजूकेशन, कानपुर

***सारांश***

*विश्व स्तर पर मानव संसाधन की अपार संपदा से परिपूर्ण हमारा देश भारत जो कभी विश्वगुरू का स्थान रखता था, आज विद्यालय से बाहर बच्चो वाले देशों की सूची में सबसे ऊपर है। यह विडंबना ही है। शिक्षा की महत्ता समझते हुये समय–समय पर शैक्षिक नीतियों का निर्धारण किया जाता रहा है तथा इसी कड़ी में 21वीं सदी के आकांक्षापूर्ण लक्ष्यों के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निर्मित की गई। इसमें भारत को पुनः ज्ञान के क्षेत्र मे वैश्विक महाशक्ति में परिवर्तित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को लोकसेवा मानते हुये, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक बच्चे तक पहुचाकर उसका बुनियादी अधिकार सुनिश्चित करने पर जोर देती है, साथ ही ऐसी शिक्षा व्यवस्था की सिफारिश करती है जो भारत की विविध, प्राचीन और समृद्ध व आधुनिक संस्कृति तथा ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं पर आधारित हो, जिससे देश के लिये गौरव का भाव उत्पन्न हो। परन्तु इस कार्यक्रम की सफलता उस निरंतरता पर निर्भर है जिसके साथ सतत् सार्वजनिक नीतियों और कार्यवाही के आधार पर स्कूली शिक्षा का विस्तार होगा। कार्यक्रम में व्यय तय करने के लिये आर्थिक संसाधनों से अधिक कार्यक्रम सफल बनाने की इच्छाशक्ति महत्वपूर्ण होगी।*

*संकेत शब्द :– शिक्षा व्यवस्था, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, निपुन भारत।*

**प्रस्तावना :–**

विश्व स्तर पर मानव संसाधन की अपार संपदा से परिपूर्ण हमारा देश भारत जो कभी विश्वगुरू का स्थान रखता था, आज विद्यालय से बाहर बच्चो वाले देशों की सूची में सबसे ऊपर है। यह विडंबना ही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त से ही इस दिशा में उपाय किये जा रहे हैं, जिसमें शिक्षा ही सबसे शक्तिशाली हथियार साबित हुआ है जो अज्ञानता, गरीबी और सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार की बेड़ियों से मुक्ति प्रदान कर सकता है। इसकी महत्ता समझते हुये समय–समय पर शैक्षिक नीतियों का निर्धारण किया जाता रहा है तथा इसी कड़ी में 21वीं सदी के आकांक्षापूर्ण लक्ष्यों के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निर्मित की गई। इसमें भारत को पुनः ज्ञान के क्षेत्र मे वैश्विक महाशक्ति में परिवर्तित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को लोकसेवा मानते हुये, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक बच्चे तक पहुचाकर उसका बुनियादी अधिकार सुनिश्चित करने पर जोर देती है, साथ ही ऐसी शिक्षा व्यवस्था की सिफारिश करती है जो भारत की विविध, प्राचीन और समृद्ध व आधुनिक संस्कृति तथा ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं पर आधारित हो, जिससे देश के लिये गौरव का भाव उत्पन्न हो।

ASER Report के अनुसार भारत में विद्यार्थियों की उपलब्धियों कक्षा के लिये (पढ़ने के स्तर पर) किये गये सर्वेक्षणों से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये हैं–

**तालिका–1**

प्रत्येक कक्षा के लिये पढ़ने के स्तर के अनुसार बच्चों का प्रतिशत–2018

| कक्षा | अक्षर भी नही | अक्षर | शब्द | कक्षा 1 स्तर का पाठ | कक्षा 2 स्तर का पाठ | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| I | 47.2 | 32.3 | 9.4 | 5.3 | 5.9 | 100 |
| II | 24.0 | 33.7 | 15.4 | 10.5 | 16.5 | 100 |
| III | 15.1 | 27.2 | 15.7 | 14.0 | 28.1 | 100 |
| IV | 9.8 | 19.5 | 12.5 | 15.8 | 42.3 | 100 |
| V | 7.8 | 14.6 | 10.9 | 14.8 | 52 | 100 |
| VI | 5.0 | 11.1 | 8.2 | 15.1 | 60.6 | 100 |
| VII | 3.3 | 8.4 | 6.9 | 13.3 | 68.1 | 100 |
| VII | 2.6 | 6.7 | 6.0 | 11.0 | 73.7 | 100 |
| ASER Report – 2018 | | | | | | |

उपरोक्त तालिका में वर्णित असंतोषजनक परिणामों के कारणों के सम्बन्ध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इंगित है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यसामग्री जरूरत से बहुत ज्यादा ठूंसी हुई है। कक्षा में किसी भी प्रकार से पाठ को पूरा करने और आदेशित पाठ्यसामग्री के हर हाल में रटने की परिपाटी, आलोचनात्मक सोच, खोज आधारित, संवाद आधारित और मूल्यांकन आधारित शिक्षा यानी तर्क व आलोचनात्मक सोच समझ प्राप्त करने के अवसरों के लिये अवसर ही प्रदान नहीं करती है। (NEP2020, P-102) इसलिये नई शिक्षा नीति के लागू होने के बाद मूलभूत शिक्षा में सुधार के लिये तत्काल प्रयास करना प्रासंगिक होगा। इसके लिये यह आवश्यक था कि राष्ट्र शिक्षा की बुनियाद से ही दृढ़ीकरण की ओर विशेष रूप से ध्यान दे। सरकार द्वारा जुलाई 2017 से आरम्भ किये गये शिक्षा नीति के कार्यान्वयन के प्रयासों की कड़ी में 5 जुलाई 2021 को शिक्षा मंत्रालय द्वारा बुनियादी शिक्षा में गुणवत्ता व सुधार हेतु निपुण भारत मिशन कार्यक्रम (NIPUN, बेहतर समझ और संख्यात्मक ज्ञान के साथ पढ़ाई में प्रवीणता के लिये राष्ट्रीय पहल) आरम्भ किया गया जिसका प्रमुख लक्ष्य 2026–27 तक प्रत्येक बच्चे को तीसरी कक्षा के अंत तक पढ़ने–लिखने एवं अंकगणित को सीखने की क्षमता प्रदान की जायेगी।

वर्तमान समय में भारत की कुल जनसंख्या के 25.78% लोग 0–14 आयुवर्ग के हैं। जिसमें से बुनियादी शिक्षा ग्रहण करने वालों (0–9 आयु वर्ग) की अनुमानित जनसंख्या 7,07,44000 है और इनमें से लगभग 0.24% (लगभग 1,72,688) बच्चे विद्यालयों में नामांकित नही हैं और वर्तमान में इस आयुवर्ग की शिक्षा का दायित्व आंगनबाड़ी और प्राथमिक शिक्षा विभाग पर है जिसमें से पूर्व प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अधिकांश लोग अप्रशिक्षित हैं। इसलिये बुनियादी स्तर से सुधार हेतु आयोजित शैक्षिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन समग्र शिक्षा, शिक्षा कार्यक्रम के तहत तीन पूर्व में चल रही योजनाओं–सर्वशिक्षा अभियान (SSA), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) और शिक्षक शिक्षा (TE) को मिलाकर क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया है। इसके अन्तर्गत शिक्षक क्षमता निर्माण, उच्च गुणवत्ता और छात्र एवं शिक्षक संसाधनों/शिक्षण सामग्री का विकास तथा सीखने के परिणामों को लेकर प्रत्येक बच्चे की प्रगति पर ध्यान केन्द्रण करना लक्ष्य होगा।

**योजना का कार्यन्वयन :–**

योजना का कार्यान्वयन स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा किया जायेगा जो कि राष्ट्रीय–राज्य – जिला–ब्लाक–स्कूल स्तर सहित, पांच स्तरीय कार्यान्वयन तंत्र के माध्यम से समूचे देश में लागू होगा।

**योजना के उद्देश्य :–**

योजना का मुख्य उद्देश्य बच्चों की आन्तरिक योग्यताओं को विकसित करना और आजीविका के लिये कौशल की नींव तैयार करना है। बच्चे के सर्वांगीण विकास हेतु निम्नलिखित तीन विकासात्मक लक्ष्यों को सम्मिलित किया गया है –

1. विकासात्मक लक्ष्य –1 जिससे बच्चे स्वास्थ्य और आरोग्यता को बनाये रख सके।
2. विकासात्मक लक्ष्य–2 बच्चों को प्रभावी संचारक बनाया जा सके।
3. विकासात्मक लक्ष्य–3 बच्चे पूरी तरह लिप्त होकर सीखने वाले बने और मौजूदा माहौल से जुड़ सके। (उपरोक्त प्रत्येक विकासात्मक लक्ष्य के लिये दक्षताओं की पहचान की गई है।)

**पाठ्यक्रम :–**

इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को मुख्यतः विकासात्मक लक्ष्यों से सम्बन्धित दक्षताओं को विकसित करने को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया है। राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद (NCERT) द्वारा बाल्यावस्था की शिक्षा के लिये दो भागो एक 0–3 आयु वर्ग के लिये व दूसरा 3–8 आयु वर्ग के लिये एक उत्कृष्ट पाठ्यक्रम और शैक्षणित ढांचा विकसित करने का प्रयास है। पाठ्यक्रम के शिक्षण हेतु प्रायोगिक आधिगम पर विशेष जोर होगा तथा कला व खेल समन्वय जैस क्रास करिकुलर दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर शिक्षण विधियों का उपयोग किया जायेगा। पाठ्यक्रम को मातृभाषा स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा के अध्यापन के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

**शिक्षक :–**

नई शिक्षा नीति 2020 ने अपने उद्देश्यों को पाठ्यक्रम के माध्यम से शिक्षको के बौद्धिक कौशल व रचनात्मकता का उपयोग कर मानव संसाधन (बच्चों) के सर्वांगीण विकास को प्राप्त करने का प्रयोजन किया है। वर्तमान में शिक्षकों की कमी को दृष्टिगत करते हुए मुख्य रूप से बुनियादी शिक्षा के स्तर पर प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था हेतु वर्तमान में कार्यरत अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करके शिक्षण कार्य में सहयोग प्राप्त करने का विचार है तथा शिक्षक सभी छात्रों की प्रगति रिपोर्ट रख सकें इसलिए शिक्षक छात्र अनुपात 30:1 से कम करने पर जोर दिया जायेगा।

**मूल्यांकन : –**

अधिगम परिणामों के मूल्यांकन हेतु रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग बढ़ाया जायेगा। मूल्यांकन उपरान्त विद्यार्थी को जारी किये जाने वाले प्रगति कार्ड को 360 डिग्री बहु आयामी रूप में परिवर्तित किया जायेगा जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी के संज्ञानात्मक, भावात्मक, साइकोमोटर डोमेन में विकास का बारीकी से विश्लेषण कर विद्यार्थी की विशिष्टताओं को भी सम्मिलित किया जायेगा। इसमें स्वमूल्यांकन, सहपाठी मूल्यांकन, प्रोजेक्ट कार्य और खोज आधारित अध्ययन में प्रदर्शन, क्विज, रोल, प्ले, समूह कार्य, पोर्टफोलियों आदि शिक्षक मूल्यांकन सहित सम्मिलित होगा।

**चुनौतियाँ (कठिनाइयाँ) व सुझाव :–**

- कार्यक्रम के देशव्यापी कार्यान्वयन हेतु राज्य, जिला, ब्लाक, पंचायत स्तरों पर कई हितधारको को सम्मिलित किया जाना है। इन विभिन्न स्तरों पर सभी के अधिकार व उत्तरदेयता का निर्धारण करना चुनौतीपूर्ण है।

- आधुनिक तकनीकों के अधिक से अधिक उपयोग व कार्यान्वयन के साथ कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करने हेतु वित्त की व्यवस्था करना जबकि कोविड–19 के उपरान्त अर्थव्यवस्था पहले से ही लचर है।
- वर्तमान समय में प्रत्येक संस्थान के ग्रामीण, दूरस्थ और बुनियादी ढाचें को ध्यान में रखते व्यापक परिवर्तन कर पाना निश्चित रूप से चुनौतीपूर्ण है।
- बड़ी संख्या में योग्य/प्रशिक्षित शिक्षकों को सृजित करना कठिन कार्य है।
- मौजूदा शिक्षा व्यवसाी से हटकर प्रायोगिक शिक्षा और गहन सोच पर आधारित शिक्षा की ओर बढ़ने का लक्ष्य निर्धारित है, इसके लिये शिक्षा जगत को चलाने वाले लोगों व हितधारकों के विचारों में व्यापक परिवर्तन लाना एक कठिन कार्य होगा।
- इस मिशन को प्राथमिक विद्यालयों से लेकर एलीट स्कूलों तक लागू करना एक प्रमुख चुनौती होगा, इसके बगैर कार्यक्रम अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कहाँ तक कर पायेगा, यह कहना मुश्किल है।

  इस कार्यक्रम की सफलता उस निरंतरता पर निर्भर है जिसके साथ सतत् सार्वजनिक नीतियों और कार्यवाही के आधार पर स्कूली शिक्षा का विस्तार होगा। कार्यक्रम में व्यय तय करने के लिये आर्थिक संसाधनों से अधिक कार्यक्रम सफल बनाने की इच्छाशक्ति महत्वपूर्ण होगी।

**संदर्भ सूची :–**


Kumari, S. (2020). NEP 2020 Challenges to Teacher Education, International Journal of Applied Research 2020 : 6(10): 420-424.

Kurien, A., & Chandramana., S., B. (2020). Impact of New Education Policy 2020 on higher education.https://www.researchgate.net/publication/346654722_Impact_of_New_Education_Policy_2020_on_Higher_Education

Singh, V., & Devi, K. (2020). उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ मे ंराष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अन्तदृष्टि, International Journal of Research and analytical Reviews (IJRAR) E-ISSN:2348-1269, January 2022.

Ministry of Education, Govt. of India. (n.d.). National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy. https://nipunbharta.education.gov.in

Daily Updates. (2022, July 6). NIPUN Bharat mission. https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/nipun-bharat-mission



**How to cite reference of this paper-**

Singh. A. (2022). शैक्षिक नींव की दृढ़ता की ओर एक कदम : निुपण भारत मिशन. *Educational Metamorphosis, 1*(2), 104-107.